हिन्दी

(स्पर्श) (पाठ 14)(हरिवंशराय बच्चन – अग्निपथ)
(कक्षा 9)

प्रश्न अभ्यास

प्रश्न 1 :

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

(क).

कवि ने 'अग्नि पथ' किसके प्रतीक स्वरूप प्रयोग किया है ?

उत्तर क:

कवि ने 'अग्नि पथ' जीवन के कठिनाई भरे रास्ते के प्रतीक के रूप में प्रयोग किया है । उसके अनुसार पूरा जीवन एक आग के रास्ते के समान है , जिस पर हमें उसकी गर्मी को सहते हुए लपटों का सामना करते हुए आगे बढ़ना है ।

(ख).

'माँग मत', 'कर शपथ', 'लथपथ' इन शब्दों का बार–बार प्रयोग कर कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर ख :

इन शब्दों के बार–बार प्रयोग के द्वारा कवि यह समझाने का प्रयत्न कर रहा है कि जीवन रूपी पथ पर तुझे स्वयं ही आगे बढ़ना है । किसी से भी मदद नहीं मांगनी है यदि तू मदद मांगेगा तों स्वयं ही कमजोर पड़ जाएगा और इस अग्निपथ को पार करना तेरे लिए मुश्किल हो जाएगा ।

(ग).

'एक पत्र छाँह भी माँग मत' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर ग :

कवि का आशय है कि इस जीवन के कठिन रास्ते पर तू लगातार चलता चल रास्ते में आने वाली छॉह (जीवन में आने वाला अच्छा समय) की तू कामना मत कर केवल अपना कार्य करता रह ।

प्रश्न 2 :

निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए ।

(क).

तू न थमेगा कभी
तू न मुड़ेगा कभी ;

उत्तर क :

कवि का कहना है कि इस जीवन के अग्निपथ पर तू निडर होकर चल और न तू कभी थकना न ही कभी पीछे मुड़कर देखना कि मैंने क्या खोया क्या पाया ।

(ख).

चल रहा मनुष्य है
अश्रु–स्वेद–रक्त से लथपथ, लथपथ, लथपथ ।

उत्तर ख :

कवि के अनुसार अपने कठिन जीवन पथ पर मनुष्य आंसू, पसीने और खून से लथपथ होकर आगे बढ़ रहा है और निरंन्तर बढ़ रहा है ।

प्रश्न 3 :

इस कविता का मूलभाव क्या है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 3 :

कविता का मूलभाव यही है कि कवि सभी लोंगो से कह रहा है कि जीवन के अग्नि रूपी कठिन मार्ग पर तुम्हें अकेले ही चलना है । किसी से भी मदद नहीं मांगनी है और न ही रुकना है ।